मासिकी

ISSN 2278-0416

हरिप्रभा

अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्किता मासिकी शोधपत्रिका

An International Refereed Monthly Research Journal

वर्षम् : १६, अङ्कः : ११-१२, नवम्बर - दिसम्बर - २०१६

हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व।
अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः सध्रीचीनो मादयस्वा निषद्य॥
(ऋक् १०/११२/३)

हरियाणा संस्कृत अकादमी, पंचकूला

अनुक्रमणिका

			पृष्ठसंख्या
	सम्पादकीयम्		३
१.	भारतीयसंस्कृतवाङ्मये मूल्यानां संकल्पना	डॉ. प्रेमसिंहसिकरवार:	५
२.	अर्वाचीनसंस्कृतस्तोत्रसाहित्यम्	डॉ. रामदत्त शर्मा	१३
३.	भारतीय-ज्योतिषशास्त्रे ग्रहणविज्ञान विमर्श:	प. श्रीकृष्णकुमार मिश्र	२०
४.	कृषिकर्मणि ज्योतिष: प्रभाव:	श्रीखेमराजरेग्मी	२८
५.	महाकविभवभूते: राष्ट्रीयभावना	डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त:	३५
६.	जलस्वरूपविवेचनम्	अजयकुमारकर:	३९
७.	आचार्यमहेशचन्द्रगौतमस्योपन्यासेषु नारीणां स्थिति:	डॉ. कामदेव झा	४५
८.	वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये मूल्यशिक्षाया: उपादेयता	डॉ. विचारीलालमीना	५५
९.	हरियाणा-संस्कृत-अकादम्या: गतिविधिय:	डॉ. प्रतिभा वर्मा	६४

*****

वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये मूल्यशिक्षायाः उपादेयता

*डॉ. विचारीलालमीना

शोधसारः

छात्रेषु सामाजिकाणां नैतिकमूल्यानां च विकासः शिक्षायाः मुख्योद्देश्येषु एकमस्ति। यतोहि शिक्षा मूल्यं च एकस्य नाणकस्य रूपद्वयमस्ति। आत्मविकासाय आत्मोन्नतये च सहायकप्रक्रिया एव मूल्यं वर्तते। भारतीयदर्शनपरम्परायां सार्वजनीयबन्धुत्वं सम्पूर्णविश्वं एकपरिवारत्वेन गण्यते तेन च ''**वसुधैव कुटुम्बम्**'' इति सम्प्रत्ययः स्पष्टीक्रियते। मूल्यानि ध्येय-आदर्श-मानवप्रकृति-कर्मणः स्वरूपस्य उपरि आधारितानि भवन्ति। सत्वरजत्तमस इत्येतेषु त्रिषु गुणेषु कस्यचित् एकस्य गुणस्य प्रधानता व्यक्तेः जन्मना भवति। सत्त्वगुणः आनन्दं ज्ञानं च सम्बन्धितमूल्यस्य प्राधान्यं प्रकटयति।

मानवजीवनस्य जन्मजातमूलप्रवृत्तिनाम् आधारे मूल्यानां निर्धारणम् अकुर्वन् तत् एवमेव भवति। यथा-

१. शारीरिकमूल्यानि
२. वैयक्तिकमूल्यानि
३. आर्थिकमूल्यानि
४. नैतिकमूल्यानि
५. सामाजिकमूल्यानि
६. राजनैतिकमूल्यानि
७. सौन्दर्यात्मकमूल्यानि
८. धार्मिकमूल्यानि
९. बौद्धिकमूल्यानि

अतः समाजे व्याप्तविकृत्यान् दूरीकरणार्थं भारतीसंस्कृतेः ओतप्रोतेन सांस्कृतिकमूल्यानां शिक्षाया अतीव आवश्यकता वर्तते। यस्य माध्यमेन समाजम् एकत्रितं कृत्वा संयुक्तपरिवारप्रथा यथा बालकान् रामः, कृष्णः, एकलव्यः, प्रहल्लादः, श्रवणकुमारादीनां कथामाध्यमेन पितृभक्तिः, वचनबद्धता, गुरुभक्तिः, आज्ञाकारिता, सत्यम्, प्रेमः, सदाचारः, सहयोगः, करुणादिनां सद्गुणानामाधारे मूल्यानि समृद्धं कृत्वा भारतं विश्वगुरूं कर्तुं शक्यते।

भूमिका-

मूल्यम् एको अमूर्त्तः सम्प्रत्ययो भवति अस्य सम्बन्धः मनुष्याणां भावात्मकपक्षेण साकं

---

* *सहायकाचार्यः शिक्षाशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विद्यापीठम् (मानितविश्वविद्यालयः) नवदेहली- ११००१६*

ISSN 2454-1249

दशमोऽङ्कः, X[th] Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2019

July-December 2019

शिक्षास्मृतिः

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA-SMRITI

(An International Peer-Reviewed
Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. के. रविशङ्करमेनोन्

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

क्र.	पत्रम्	लेखकः	पृ.
1.	योगस्वरूपसमीक्षा	प्रो.मारकण्डेयनाथतिवारी	1
2.	अध्यापकशिक्षायां प्रयुक्तोपागमाः	डा. आरती शर्मा	4
3.	भक्तेः फल विमर्शः	डा. अनिलानन्दः	7
4.	वैदिककाले लैङ्गिकीसमानता	श्री नेहलः एन. दवे	12
5.	योगशिक्षायां प्रतिबिम्बिता स्वास्थ्यसचेतनता	अनूपविस्वासः	20
6.	संस्कृतव्याकरणस्य वैज्ञानिकत्वम्	खुशबू कुमारी	31
7.	भवभूतेः उत्तररामचरिते निहित शिक्षामनोविज्ञानतत्त्वानि	राजमणि उपाध्यायः	34
8.	शिक्षणवृत्तिः	सतीशकुमारशर्मा	39
9.	द्रव्यादिमध्ये द्रव्याणि नवैवेत्यन्वयः	गीतांजलि देइ	42
10.	जलवायु परिवर्तनः प्रभाव, कारण एवं चुनौतियाँ	डॉ. विचारी लाल मीना	51
11.	संस्कृतशिक्षण में शोध सम्भावनाएँ	डा. सुरेन्द्र महतो	57
12.	विकलांगबालकोंहेतुकार्यरतस्वयंसेवीसंस्थाओंकीभूमिका	डा.अजयकुमार	64
13.	हिन्दी शिक्षण में निबन्ध विधा का स्वरुप	डॉ. सुनील कुमार शर्मा	73
14.	मतिज्ञान का ज्ञानमीमांसात्मक, संज्ञानात्मक, शिक्षणशास्त्रीय प्रतिमान केन्द्रित विश्लेषण	डा. नितिन कुमार जैन	78
15.	वैदिक ज्ञान का वर्तमान विश्व पर प्रभाव	रामकुमार शर्मा	85
16.	वाल्मीकीय रामायण में प्रकृति एवं पर्यावरण	डा. शिप्रा पारीक	98
17.	प्राकृतचरितसाहित्यकास्वरूपऔरवैशिष्ट्य	राजन	102
18.	श्रद्धा	श्रद्धा तिवारी	106
19.	Teachers as Reflective Practitioner	Dr.TamannaKaushal	113

10.

जलवायु परिवर्तन : प्रभाव, कारण एवं चुनौतियाँ

डॉ. विचारी लाल मीना
असि. प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली-110016

जलवायु परिवर्तन : संप्रत्यय

पृथ्वी की जलवायु, इसकी उत्पत्ति के समय से ही प्राकृतिक कारणो; जैसे- ज्वालामुखी का फटना, सूर्य की ऊष्मा और प्रकाश में परिवर्तन तथा हाल ही के वर्षो में हुए मानवीय गतिविधियों के कारण परिवर्तित हो रही है। हम सभी जानते हैं कि ग्रीन हाउस प्रभाव एक प्राकृतिक घटना है जो कि पृथ्वी का तापमान 15^0 से. के औसत पर बनाए रखने के लिए आवश्यक है, जिससे इस ग्रह पर जीवन सम्भव हुआ है। कार्बन डाइऑक्साइड जलवाष्प, मीथेन, नाइट्स ऑक्साइड, क्षोभमण्डलीय ओजोन ग्रीन हाऊस प्रभाव के लिए उत्तरदायी गैसे हैं। ये वातावरण में प्राकृतिक रूप में विद्यमान वे गैसे हैं, जो कि पृथ्वी की सतह से परावर्तित सूर्य के विकिरण को अवरक्त तरंगों या ऊष्म तरंगों के रूप में अवशोषित करती है। इस प्रकार से अवशोषित ऊष्मा पूरे ग्रह पर वितरित होकर इसको गर्म रखती है। यह प्राकृतिक है कि ग्रीन हाऊस गैसों की सांद्रता बढ़ने से सूर्य विकिरणों का अवशोषण बढ़ता है और इससे पूरे भूण्डल का तापमान भी बढ़ता है। पिछले कुछ दशकों से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। ऐसा अनुमान है कि पूर्व औद्योगिक काल की तुलना में पृथ्वी का तापमान 2.5^0 से. तथा वर्ष 2100 तक 4.5^0 से. तक बढ़ेगा। अब यह निश्चित है कि, मानवीय गतिविधियों के कारण ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन के स्तर में वृद्धि, भूमण्डलीय तापमान में वृद्धि के लिए उत्तरदायी है। यह एक अप्राकृतिक घटना है जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। ग्लोबल-वार्मिंग जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देता है। कुछ मानवीय गतिविधियाँ भी जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देती है।

औद्योगिकीकरण और सघन कृषि कार्यों के साथ-साथ ईधनों का दहन जैसी गतिविधियाँ कार्बन डाईऑक्साइड एवं मीथेन के उत्सर्जन के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है। हिमयुग के तुरन्त बाद, कार्बन डाईऑक्साइड का सान्द्रण 280 भाग प्रति लाख आयतन (पीपीएमबी) था जो वर्ष 1958 के दौरान बढकर 315 पीपीएमबी और 1989 से 1998 के बीच 365 पीपीएमबी हो गया। अनुमान है कि पृथ्वी के वातावरण में प्रतिवर्ष 0.4 प्रतिशत कार्बन डाईऑक्साइड की वृद्धि होगी। तथा 21वीं शताब्दी के मध्य में यह मात्र बढ़कर 600 पीपीएमबी हो जाएगी। दूसरी महत्त्वपूर्ण ग्रीन हाऊस गैस मीथेन है जो कि मुख्यतया पशु पालन सम्बन्धी गतिविधियों और धान की खेती में किण्वन के परिणामस्वरूप उत्सर्जित होती है। इसका सांद्रण वर्ष 1950 से लगातार बढ़ता जा रहा है। नाइट्रस ऑक्साइड प्राकृतिक रूप से मृदा में सूक्ष्मजीवी गतिविधियों के दौरान उत्सर्जित होती है। हालाकि, इसका स्तर कृषि में उर्वरकों का अति प्रयोग और ईधन के कारण बढ़ रहा है। हाल के कुछ वर्षों में क्लोरोफ्लोरो कार्बन (सी.एफ.सी.) नामक गैसे ग्रीन हाऊस गैसों के परिवार में सम्मिलित हुई हैं। ये केवल मानव गतिविधियों के

Impact Factor: RJIF 5.22
ISSN: 2455-2070

Index Copernicus 2016: 72.87
www.socialsciencejournal.in

International Journal of Humanities and Social Science Research

Online and Print Journal | Indexed Journal | Refereed Journal | Peer Reviewed Journal

Volume 5 | Issue 6 | Nov - Dec | 2019

Published By
Gupta Publications

International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 28-09-2019; Accepted: 30-10-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No 182-186

संस्कृत शिक्षा में शोध के क्षेत्रः चुनौतियाँ एवं सुझाव

डॉ. विचारी लाल मीना

असि.प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली भारत

प्रस्तावना

शैक्षिक अनुसन्धान शिक्षा व्यवस्था में अपेखित जागरूकता, कुशलता एवं गुणवत्ता बनाए रखने की विलक्षण दृष्टि एवं आतुरता सृजित करने के साथ ही उसे युगानुरूप अपेक्षाओं में रूपायित करने में सहायक होता है। यह वस्तुनिष्ठ शैक्षिक ज्ञान के कोष में अभिवृद्धि, शैक्षिक नीतियों एवं सिद्धान्तों के निरूपण में वैज्ञानिक आधार उपलब्ध कराने तथा शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षकों एवं अन्य शिक्षण-कर्मियों में शिक्षा एवं शिक्षण-अधिगम की समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक रूझान विकसित करने में प्रभावी साधकत्व प्रदान करता है। संस्कृत शिक्षा से सम्बन्धित अनुसन्धान कार्यों के संदर्भ में भी यह लागू होता है।

शैक्षिक अनुसन्धान के अनुक्षेत्रों को कई दृष्टियों से वर्णित किया जा सकता है। भारतीय संदर्भ में इन अनुक्षेत्रों की प्राथमिकताएँ राष्ट्रीय प्राथमिकताओं एवं नीतियों के अनुरूप बदलती रही है। लेकिन किसी विषय-क्षेत्र से सम्बन्धित अनुसन्धान शिक्षण, अधिगम, मूल्यांकन, मापन एवं परीक्षण, अनुदेशनात्मक संसाधन, प्रशासन, पाठ्यक्रम आदि शिक्षा के विभिन्न स्तरों-प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों में सम्बन्धित होते हैं और इनकी प्राथमिकता शिक्षा के औपचारिक एवं निरौपचारिक सन्दर्भों को दृष्टिगत रखकर निर्धारित किये जाते हैं। प्रस्तुत पत्रक में इन अनुक्षेत्रों को संस्कृत शिक्षा से सम्बन्धित अनुसन्धान मुद्दों को अन्तर्गत वर्णित किया गया है तथा उनसे जुड़ी चुनौतियों को व्याख्यायित करने एवं उनके समाधान प्रस्तावित करने का प्रयास किया गया है। इन अनुक्षेत्रों यथा- भारतीय ग्रन्थों में निहित शैक्षिक तत्व एवं विचार और वर्तमान सन्दर्भ में उनकी प्रासंगिकता, विभिन्न स्तरों पर संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रमों को विश्लेषण, संस्कृत शिक्षा से जुड़े कर्मियों का मनोवैज्ञानिक कारकों के संदर्भ में अध्ययन, भाषा शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन, एवं तदनुसार सुधार की ओर प्रवृत्त करना, स्वानुदेशनात्मक सामग्रियों का निर्माण एवं उनकी वैधता का निरूपण, भारतीय अवधारणाओं पर आधारित शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक तत्वों पर शोध उपकरणों का निर्माण तथा संस्कृत शिक्षा की प्रभाविता सुनिश्चि करने की दृष्टि से क्रियात्मक अनुसन्धान के उपक्रम की प्रयोज्यता आगे दिये गए बिन्दुओं के रूप प्रस्तुत में किया गया है।

संस्कृत शिक्षा में शोध के विभिन्न अनुक्षेत्र-

1. शैक्षिक तत्वों एवं विचारों का अध्ययनः भारतीय वाङ्मय में निहित शैक्षिक तत्त्वों एवं विचारों को परखना, उनका स्वरूप, वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता, व्यावहारिक परिस्थितियों में प्रयोग आदि से सम्बन्धित अनुक्षेत्रों को संस्कृत शिक्षा में अनुसन्धान कार्य का विषय बनाया जा सकता है। शैक्षिक तत्वों के अन्तर्गत शिक्षा के उद्देश्य, स्वरूप, शिक्षण एवं मूल्यांकन विधियों, प्रबन्धन आदि का समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए उनकी वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला जा सकता है। इस प्रकार के अध्ययनों द्वारा ज्ञान के दायरों में तो विकास होगा ही साथ ही उभरती चुनौतियों का सामना करने की युक्तियों के लिए प्रबल आधार विकसित हो सकेगा।

2. विभिन्न स्तरों पर संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रमों का विश्लेषणः प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तरों पर संस्कृत शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों का मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययनों को भी अनुसन्धान का क्षेत्र बनाया जा सकता है। इन विश्लेषणों को पाठ्यक्रम के संरचनात्मक तत्वों के आधार पर अन्य भाषायी विषयों के पाठ्यक्रमों से तुलना करके अधिगमकर्त्ता विद्यार्थी के लिए सुग्राह्य बनाया जा सकता है। इस प्रकार के अध्ययन शिक्षा के किसी भी स्तर हेतु संस्कृत पाठ्यक्रम के अभिकल्पन में सही संस्कृत शिक्षा में शोध के अनुक्षेत्रः चुनौतियाँ एवं समाधान......... दिशा निर्देश दे पायेंगे जिससे इन पाठ्यक्रमों की उद्देश्यपूर्णता एवं प्रभाविता को सुनिश्चित करना सम्भव हो सकेगा।

3. मनोवैज्ञानिक कारकों के सन्दर्भ में अध्ययनः संस्कृत शिक्षा से जुड़े प्रशासकों, शिक्षकों, अध्यापक शिक्षकों, छात्रों आदि का मनोवैज्ञानिक कारकों के संदर्भ में उनकी मनोवृत्तियों एवं अभिवृत्तियों के तुलनात्मक अध्ययनों का संस्कृत शिक्षा में अनुसन्धान अनुक्षेत्रों के रूप में लिया जा सकता है। मनोवैज्ञानिक कारकों के अन्तर्गत व्यक्तित्व, बुद्धि (संज्ञानात्मक, सांवेगिक एवं आध्यात्मिक), सृजनात्मक चिन्तन, अभिवृत्ति, रूचि, मूल्य, समायोजन आदि के आधार पर शोध कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। इस प्रकार के अध्ययनों द्वारा संस्कृत शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों का इन विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारकों के संदर्भ में वस्तु स्थिति जानने में मदद मिलेगी जिससे सम्बन्धित कारक को प्रभावी रीति से संयोजित करने में अपेक्षित प्रयास किये जा सकेंगे।

Year: **2019**, Volume: **5**, Issue: **6**
ISSN: **2455-2070**
Impact Factor: **RJIF 5.22**
Online Available at **www.socialsciencejournal.in**

International Journal of Humanities and Social Science Research

1. **Emotion regulation in psychology in students**
Authored by: Enny Fitriani
Page: 155-156

2. **Strategic leadership and performance** of small and medium enterprises in rivers and Bayelsa States of Nigeria
Authored by: Onyenma Uzoma Obioma
Page: 157-162

3. **Working conditions of pourakarmikas in Bangalore city**: An analytical study
Authored by: G Srinatharaj, Rajendran
Page: 163-167

4. **Possible cause for the death of Alexander**
Authored by: Shrana Rathore
Page: 168-170

5. **Decomposition analysis of income difference between sprinkler irrigation system and conventional irrigation system in cultivation of *Rabi* Sorghum in Northern Karnataka**
Authored by: Shreeshail rudrapur, SM Mundinamani, MV Manjunatha
Page: 171-174

6. **The geographical penetration of digital shopping in India: Trending towards E-commercism and cashless economy**
Authored by: Dr. Shweta Rani, Afrin Zaidi, Simran Bhardwaj
Page: 175-181

07. **संस्कृत शिक्षा में शोध के क्षेत्राः चुनौतियाँ एवं सुझाव**
Authored by: डॉ. विचारी लाल मीना
Page: 182-186

8. **Right to freedom of belief and religion in constitution of Vietnam**
Authored by: Duong Thi Nhan
Page: 187-192

9. **Automobile sector slowdown: An analytical study of consumer psychology**
Authored by: Krupamani
Page: 193-200

10. **Job satisfaction as a function of stress among job satisfaction**
Authored by: Parul Singh
Page: 201-205

Peer Reviewed
ISSN (P) : 2321-290X (E) 2349-980X
RNI No. : UPBIL/2013/55327

Srinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Peer Reviewed / Refereed Journal

VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019

Indexed with Google scholar

Impact Factor

SJIF = 5.921 (2018)
GIF = 0.543 (2015)
IIJIF = 6.038 (2018)

UGC S.NO 40880 Shrinkhla UGC approved listed

The Research Series

द्विभाषीय मासिक

Shrinkhala

शृंखला

A Multi-Disciplinary International Journal

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Contents (Hindi Papers)

S. No	Particulars	Subject	Page No. From	To
1.	**संगीतानुरागी महात्मा गांधी** राजेश गोपालराव केलकर, बड़ोदरा, गुजरात, भारत	कंठ्य संगीत	H-01	H-03
2.	**बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान में मध्याह्न भोजन योजना की भूमिका (जनपद हरिद्वार एवं पौड़ी के विशेष सन्दर्भ में)** हेमलता वर्मा, श्रीनगर, उत्तराखण्ड, भारत	राजनीति विज्ञान	H-04	H-09
3.	**वर्तमान भारत में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता** दीप्ति चतुर्वेदी, पाली, राजस्थान, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-10	H-13
4.	**सुस्थिर विकास में विद्यालयों की भूमिका** विचारी लाल मीना, नई दिल्ली, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-14	H-16
5.	**स्वामी विवेकानन्द के विचारों का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन** अतुल कुमार मिश्र, सतना (म0प्र0) भारत	शिक्षा शास्त्र	H-17	H-20
6.	**वर्तमान में शैक्षिक शोध की आवश्यकता एक अध्ययन** भावना तिवारी, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-21	H-23
7.	**पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन** छविलाल एवम् रजनी सिंह, दयालबाग, आगरा, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-24	H-29
8.	**पं0 दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन में धर्म सम्बन्धी अवधारणा** धीरज सिंह, मोहननगर, गाजियाबाद, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-30	H-33
9.	**बी.एड. प्रशिक्षकों की भूगोल शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन** कुसुम कान्ति कुजूर एवम् अनिता सिंह, छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-34	H-36
10.	**शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा विकास की रणनीति** आस्था प्रकाश, एवं शिवानी श्रीवास्तव, गोरखपुर, उ.प्र., भारत	शिक्षा शास्त्र	H-37	H-40
11.	**सामान्य एवं अस्थि दिव्यांग बालक बालिकाओं के सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन** अमित्सौम्या एवम् वन्दना सिंह, लखनऊ, उ.प्र., भारत	गृहविज्ञान	H-41	H-44
12.	**छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति – तीज त्योहार** पद्मनी सिन्हा, एवं आभा रूपेन्द्र पाल, रायपुर (छ.ग.) भारत	इतिहास	H-45	H-50
13.	**स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान भारत में समाजवादी समाज रचना के लिए जय प्रकाश नारायण का योगदान** सुधाकर लाल श्रीवास्तव, गोरखपुर, उ.प्र., भारत	इतिहास	H-51	H-53
14.	**चित्रकूट : एक तीर्थ** महेन्द्र कुमार उपाध्याय, चित्रकूट (उ0प्र0) भारत	इतिहास	H-54	H-56
15.	**कान्हड़दे प्रबंध में वर्णित सामाजिक जीवन** वगता राम चौधरी, जालोर, राजस्थान, भारत	इतिहास	H-57	H-60
16.	**राजस्थान के करौली जिले में प्राकृतिक आपदायें और उनका प्रबंधन** हरीश सामरिया, जयपुर, राजस्थान, भारत	भूगोल	H-61	H-67
17.	**टिहरी बांध : बदलता सामाजिक परिदृश्य व विकास की संभावनाएं** शरद कुमार त्रिपाठी, देहरादून उत्तराखण्ड, भारत	भूगोल	H-68	H-70
18.	**कृषि विकास केन्द्र एवं ग्रामीण विकास : जनपद मेरठ का एक भौगोलिक अध्ययन** धनबीर सिंह, बागपत, उत्तर प्रदेश, भारत	भूगोल	H-71	H-75
19.	**जलवायु परिवर्तन एवं ऊपरी लूनी बेसिन का बदलता फसल प्रारूप** नरेन्द्र कुमार साद, ब्यावर, राजस्थान, भारत	भूगोल	H-76	H-78
20.	**भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्यमिता का योगदान** नीरज कुमार, पीलीभीत, उ0प्र0, भारत	वाणिज्य	H-79	H-81

P: ISSN NO.: 2321-290X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

सुस्थिर विकास में विद्यालयों की भूमिका

सारांश

जिस विकास को आधार बनाकर पर्यावरण के साथ घोर अन्याय एवं अत्याचार किया जा रहा है। जिससे विभिन्न पर्यावरणीय व्याधियाँ उत्पन्न हो रही हैं। प्रकृति मानव के इन क्रिया कलापों को लम्बे समय तक बर्दाश्त नहीं कर सकती है, क्योंकि उसकी भी एक सहन सीमा होती है। प्रकृति की सहनशीलता का बाँध जब टूटता है तो वह अपने ऊपर अत्याचार करने वाले को दण्डित करने लगती है। मानव अपनी इच्छाओं, निजस्वार्थों एवं आर्थिक सम्पन्नता के लिए अत्यधिक उत्पादन एवं जरूरत से ज्यादा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन प्रारम्भ कर देता है। जिससे कि स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण दूषित हो जाता है।

पारिस्थितिक तन्त्र के सन्तुलन को बनाएँ रखने के लिए मानव का प्राकृतिक संसाधनों एवं मानवीय संसाधनों का समुचित एवं सुनियोजित उपयोग करना चाहिए ताकि पारिस्थितिक विकास के ठोस आधार को निर्मित किया जा सके। सुस्थिर विकास को बनाये रखने के लिए हमें सामाजिक–आर्थिक तथा राजनैतिक तथ्यों में समुच्चय स्थापित करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त जनसंख्या के संसाधनों पर दबाव को सीमित करना, इसकी प्राथमिक आवश्यकता है। इस प्रकार सुस्थिर विकास से तात्पर्य है कि विकास इस प्रकार होना चाहिए कि जो मानव जीवन की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए भी ठोस आधार प्रस्तुत करें। और यह तभी संभव है जब विद्यालय अपने दायित्व का पूर्ण निर्वहन करें।

मुख्य शब्द : सुस्थिर विकास, सतत् विकास, पारिस्थितिक तन्त्र, पर्यावरण, मानवीय संसाधन, भौतिक संसाधन।

विचारी लाल मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
मानित विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

सतत् विकास एक प्रकार से समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था का संतुलित एकीकरण हैं। सतत् विकास इस तरह से होता है कि यह व्यापक संभावित क्षेत्रों, देशों और यहाँ तक की आने वाली पीढ़ियों को भी लाभ पहुँचाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो हमे निर्णय करते समय समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था पर उसके संभावित प्रभावों का विचार कर लेना चाहिए कि हमारे निर्णय एवं कार्य दूसरों को प्रभावित करते हैं तथा हमारे कार्यो का भविष्य पर भी प्रभाव पड़ता हैं। आर्थिक और औद्योगिक विकास इस तरह से होने चाहिए जिससे पर्यावरण को कोई भी ऐसी क्षति न हो जिसकी भरपाई न की जा सके।

संक्षेप में सतत् विकास ऐसा विकास है जो आने वाली पीढ़ियों के हितों से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता हैं।

यह परिभाषा दो महत्त्वपूर्ण बातों को उजागर करती है– पहली प्राकृतिक संसाधन न केवल हमारे जीविकोपार्जन के लिए जरुरी हैं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के जीविकोपार्जन के लिए भी उतनी ही आवश्यक हैं। दूसरी, वर्तमान में किसी भी प्रकार के विकास–संबन्धी कार्यो को करते समय उसके भविष्य में आने वाले परिणामों को ध्यान में रखना आवश्यक हैं। संक्षेप में इस परिभाषा में 'आवश्यकता' और 'भावी पीढ़ियाँ' दो महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सुस्थिर विकास के लिए छात्रों में जन सहयोग की भावना विकसित करना है।
2. प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का सुनियोजित उपयोग के लिए छात्रों को प्रेरित करना।
3. पर्यावरण के अनुकूल मानवीय गतिविधियों के लिए छात्रो को प्रेरित करना।
4. नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग के लिए छात्रो को प्रेरित करना।
5. जनसंख्या वृद्धि को कम करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना।
6. प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के संरक्षण के लिए छात्रों को प्रेरित करना।

2019

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

Vol 10 Issue 6 ISSN 2348 – 9359

IRJMSH

www.IRJMSH.COM

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

Vol 10 ISSUE 6 JUNE 2019

भूकंप प्रभावित क्षेत्र निवासियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन : गुजरात भूकंप 2001 के संदर्भ में 5

आरसी प्रसाद झा 5

"ग्रामीण गरीबी को दूर करने में मनरेगा योजना की भूमिका" (जोधपुर जिले के लूणी ब्लॉक की तीन ग्राम पंचायतों के सन्दर्भ में) 12

मंजू सोनगरा 12

Ms. Manju Songara 12

सुस्थिर विकास एवं आयाम 23

डॉ. विचारी लाल मीना 23

मनरेगा का विश्लेषणात्मक अध्ययन 29

डॉ0 ब्रहमप्रकाष सुनीता यादव 29

लेखन कौशल को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कियात्मक शिक्षण प्रविधियाँ " 36

डा0 आभा 36

ग्रामीण स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संस्कृति के बदलते मूल्य 60

धनेश राम 60

बिहार के बाल श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षणिक समस्याएँ 67

वीरेश कुमार राम 67

ग्रामीण–नगरीय प्रवसन 72

गोनो जोशी 72

IMPACT OF BRAND AWARENESS AND BRAND LOYALTY OF VKC PRODUCTS ON PURCHASE DECISION OF CUSTOMERS AND STRATEGIC BRAND MANAGEMENT SUGGESTIONS – AN ORGANIZATIONAL ANALYSIS 77

सुस्थिर विकास एवं आयाम

डॉ. विचारी लाल मीना
असिस्टेंट प्रोपफेसर, शिक्षाशास्त्रा विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
;मानित विश्वविद्यालयद्ध
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्रा, नई दिल्ली–110016

सारांश– जिस विकास को आधर बनाकर पर्यावरण के साथ घोर अन्याय एवं अत्याचार किया जा रहा है। जिससे विभिन्न पर्यावरणीय व्याध्यिाँ उत्पन्न हो रही हैं। प्रकृति मानव के इन क्रिया कलापों को लम्बे समय तक बर्दाशत नहीं कर सकती है, क्योंकि उसकी भी एक सहन सीमा होती है। प्रकृति की सहनशीलता का बाँध जब टूटता है तो वह अपने उफपर अत्याचार करने वाले को दण्डित करने लगती है। मानव अपनी इच्छाओं, निजस्वार्थों एवं आर्थिक सम्पन्नता के लिए अत्यध्कि उत्पादन एवं जरूरत से ज्यादा प्राकृतिक संसाध्नों का दोहन प्रारम्भ कर देता है। जिससे की स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण दूषित हो जाता है।

पारिस्थितिक तन्त्रा के सन्तुलन को बनाएँ रखने के लिए मानव को प्राकृतिक संसाध्नों एवं मानवीय संसाध्नों का समुचित एवं सुनियोजित उपयोग करना चाहिए ताकि पारिस्थितिक विकास के ठोस आधर को निर्मित किया जा सके। सुस्थिर विकास को बनाये रखने के लिए हमें सामाजिक–आर्थिक तथा राजनैतिक तथ्यों में समुच्चय स्थापित करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त जनसंख्या के संसाध्नों पर दबाव को सीमित करना, इसकी प्राथमिक आवश्यकता है। इस प्रकार सुस्थिर विकास से तात्पर्य है कि विकास इस प्रकार होना चाहिए कि जो मानव जीवन की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए भी ठोस आधर प्रस्तुत करें।

Impact Factor: RJIF 5.22
ISSN: 2455-2070

Index Copernicus 2016: 72.87
www.socialsciencejournal.in

International Journal of Humanities and Social Science Research

Online and Print Journal | Indexed Journal | Refereed Journal | Peer Reviewed Journal

Volume 5 | Issue 4 | Jul - Aug | 2019

Published By
Gupta Publications

Year: 2019, Volume: 5, Issue: 4
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
Online Available at www.socialsciencejournal.in

International Journal of Humanities and Social Science Research

1. **Searching pedagogical roadmap through puzzling with nature of geography**
   Authored by: Ansar Ahmad, Aejaz Masih
   Page: 131-134

2. **Role of women in saving macro and micro nutrients at household level**
   Authored by: Rajani Shahi, Neelma Kunwar
   Page: 135-136

3. **Perception of gold loan-borrowers in kadapa town, Andhra Pradesh**
   Authored by: K Khasimpeera, Dr. M Sugunatha Reddy
   Page: 137-139

4. **A study on the comparison of acetylation and oxidation phenotypes of healthy test subjects**
   Authored by: P Durga
   Page: 140-143

5. **Barriers to the teaching of comprehensive sexuality education in selected secondary schools in Lusaka province**
   Authored by: Maurice Moono, Crispin Maambo, Siamoongwa Phanety, Maiba Rosta, Godfrey Sichamba, Beatrice Chirwa
   Page: 144-150

6. **An exploration of the implementation of communicative language teaching (CLT) Approach by teachers of English language: A case of selected public secondary schools in Chongwe District, Zambia**
   Authored by: Judith Chishipula, Maurice Moono
   Page: 151-158

7. **सुस्थिर विकास में शिक्षा एवं गैर-सरकारी संगठनों का योगदान**
   Authored by: डॉ. विचारी लाल मीना
   Page: 159-161

8. **Influence of retirement challenges and coping strategies of retired civil servants in Rivers State**
   Authored by: Wachikwu T, Egbuchu SA
   Page: 162-167

9. **सामाजिक समरसता और भारतीय दर्शन**
   Authored by: डॉ प्रवेश कुमार
   Page: 168-171

10. **स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की वर्तमान् समय में प्रासंगिकता**
    Authored by: अनामिका सिंह
    Page: 172-174

International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-04-2019; Accepted: 29-05-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 159-161

सुस्थिर विकास में शिक्षा एवं गैर-सरकारी संगठनों का योगदान

डॉ. विचारी लाल मीना

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्रविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, (मानित विश्वविद्यालय), कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

सतत् विकास एक प्रकार से समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था का संतुलित एकीकरण हैं। सतत् विकास इस तरह से होता है कि यह व्यापक संभावित क्षेत्रों, देशों और यहाँ तक की आने वाली पीढ़ियों को भी लाभ पहुँचाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो हमे निर्णय करते समय समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था पर उसके संभावित प्रभावों का विचार कर लेना चाहिए कि हमारे निर्णय एवं कार्य दूसरों को प्रभावित करते हैं तथा हमारे कार्यो का भविष्य पर भी प्रभाव पड़ता हैं। आर्थिक और औद्योगिक विकास इस तरह से होने चाहिए जिससे पर्यावरण को कोई भी ऐसी क्षति न हो जिसकी भरपाई न की जा सके।

संक्षेप में सतत् विकास ऐसा विकास है जो आने वाली पीढ़ियों के हितो से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता हैं।

यह परिभाषा दो महत्त्वपूर्ण बातों को उजागर करती है- पहली, प्राकृतिक संसाधन न केवल हमारे जीविकोपार्जन के लिए जरुरी हैं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के जीविकोपार्जन के लिए भी उतने ही आवश्यक हैं। दूसरी, वर्तमान में किसी भी प्रकार के विकास-संबंधी कार्यो को करते समय उसके भविष्य में आने वाले परिणामों को ध्यान में रखना आवश्यक हैं। संक्षेप में इस परिभाषा में 'आवश्यकता' और 'भावी पीढ़ियाँ' दो महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं।

सतत् विकास की संकल्पना

सतत् विकास की संकल्पना का वास्तविक विकास 1987 में ''हमारा साझा भविष्य'' (Our Common Future) नामक रिपोर्ट, जिसे 'द ब्रंटलैंड रिपोर्ट' के नाम से भी जाना जाता है। इसके आने के बाद हुआ एवं तभी से इस शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने लगा। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा गठित आयोग ने विकास के लिए परिवर्तन हेतु वैश्विक प्रारुप का प्रस्ताव पेश किया। ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने हमारे रहन, सहन एवं शासन में पुनर्विचार की आवश्यकता पर जोर दिया। मानवता के लक्ष्यों एवं आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए पुरानी समस्याओं पर नए तरीके से विचार करने तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं समन्वय पर बल दिया। इस आयोग का औपचारिक नाम 'पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग' था। इसने मानव पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के क्षय एवं खराब होती स्थिति तथा सामाजिक आर्थिक विकास के लिए उस क्षय के परिणाम की ओर ध्यान आकृष्ट किया था। आयोग की स्थापना करते समय संयुक्त राष्ट्र महासभा ने विशिष्ट रूप से दो विचारों की ओर ध्यान आकृष्ट किया था।

- पर्यावरण,अर्थव्यवस्था तथा लोगों की भलाई अत्यधिक अन्तर्सबन्धित है।
- सतत् विकास के लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग आवश्यक है।

सतत् विकास की संकल्पना के अंतर्गत यह माना जाता है कि अकेले आर्थिक समृद्धि पर्याप्त नहीं है किसी कार्य के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय आयाम अन्तर्सबन्धित होते हैं। एक समय में इन तीनों में से केवल एक पर विचार करने से निर्णय में त्रूटी हो सकती है। तथा टिकाऊ परिणाम प्राप्त नहीं हो पाता है केवल लाभ पर ध्यान केन्द्रित करने से सामाजिक एवं पर्यावरणीय हानि होती है। जो दीर्घकाल में समाज को नुकसान पहुँचाती है।

सतत् विकास के उद्देश्य

सतत् विकास के अर्थ और अवधारणा से इतना तो स्पष्ट ही हो गया है कि सतत् विकास मानव के अस्तित्व की बुनियादी शर्त है। मानव पृथ्वी पर तभी तक हैं जब तक अन्य पशु-पक्षी और पेड़-पौधे हैं। स्वतंत्र रूप से हमारा पृथ्वी पर कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए सतत् विकास के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करनी चाहिए-

1. गरीबी निवारण एवं सतत् आजीविका
2. पर्यावरण अनुकूल मानवीय गतिविधियाँ
3. ऊर्जा दक्षता
4. प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों का संरक्षण
5. नवीकरणीय संसाधनों पर निर्भरता

सुस्थिर विकास में शिक्षा का योगदान

सभी स्तरों के लिए जैसे व्यक्तिगत, समुदायों, राष्ट्रों एवम् विश्व हेतु टिकाऊ जीवन शैली की नई पद्धति होनी चाहिये। नई पद्धति को अपनाने के लिए बहुत से लोगों के आचरण में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि शिक्षण कार्यक्रम टिकाऊ जीवनशैली की महत्ता को परिलक्षित कर

2019

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

Vol 10 Issue 5 ISSN 2348 – 9359

IRJMSH

WWW.IRJMSH.COM

PARVATI GIRI- THE MOTHER TERESA OF WESTERN ODISHA 91
Ms. Minatee Debata 91
Innovative Pedagogical Practices in Commerce 95
Dr.Anviti Rawat 95
विकासशील देशों में सुशासन 101
Dr. Latika Chandel 101
INFRASTRUCTURE PROVISION AS A TOOL IN RURAL – URBAN LINKAGES: A CASE OF MODJO AND LUME AREA. 106
*Asefa Abahumna Woldetsadik 106
** Sisay Abahumna 106
IMPLEMENTATION OF INNOVATIVE SCHEMES TO PROMOTE TOURISM IN INDIA – A STUDY 120
Dr. HAMEED BASHA.B, ... 120
A STUDY ON AGRICULTURE LABOUR MIGRATION IN S.PUDUR PANCHAYAT THANJAVUR DISTRICT 127
Dr.V. RAMAJAYAM, ... 127
Dr. G. MAHENDRAN, ... 127
CELEBRITY ENDORSEMENTS IN ADVERTISEMENTS AND CONSUMER PERCEPTIONS: A STUDY IN NCR DELHI IN REGARD TO APPAREL RETAIL SEGMENT 132
Hritanshu Jeph 132
EFFECTIVENESS OF COLLABORATIVE LEARNING ON READING COMPREHENSION 141
Kirankumar B. Solanki Dr. Paresh B. Acharya 141
वेदेषु पर्यावरणशिक्षा 151
डॉ. विचारीलालमीना 151
Designing Viewing Barriers for Panthera Enclosure in Aurangabad Bio Park 154
Author: Arch. Rakhee Kulkarni 154
Co-author: Prof. Sunil Patil, Prof. Medha Naik-Deshmukh 154

वेदेषु पर्यावरणशिक्षा

डॉ. विचारीलालमीना
असिस्टेंट प्रोपफेसर, शिक्षाशास्त्राविभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
;मानितविश्वविद्यालयःद्ध
कुतुबसांस्थानिकक्षेत्राम्, नवदेहली–110016

वेदशब्दस्य व्युत्पत्तिः –

विद् धतोः घ×्प्रत्ययेन निष्पन्नोऽ{यं वेदशब्दः। विद् ज्ञाने, विद् लाभे, विद् सत्तायायाम् इति।

वेदभागः– ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः।

वेदाघ्ँानि –

शिक्षा, कल्प, व्याकरणम्, निरुक्तः ज्योतिष, छन्दः।
पुराणन्यायमीमांसादि ध्र्मशास्त्राघ्ँमिश्रिताः।
वेदस्थानानि विद्यानां ध्र्मस्य चतुर्दशः।।

पर्यावरणम् –

परि+आवरण ''परितः आव्रियते अनेन इति ल्युट्प्रत्ययेन निष्पन्नोऽ{यं पर्यावरणशब्दः। किन्नाम पर्यावरणम्? तदाह–परितः खलु भौतिकसृष्टिरचितमूर्तीनां शरीराणां वा परितः आवृणोति तद्पर्यावरणमुच्यते।

संसारे समुद्भावानां समस्तदेहधरिणां शारीरिकबौ(कात्मिकानां विकासाय पर्यावरणशिक्षायाः महती आवश्यकता वरीवर्तते।

आग्लभाषायां पर्यावरणं ''म्दअपतवदउमदज'' इत्युच्यते। म्दअपतवदउमदज अयं शब्दः ष्म्दअपतवदउमदजष् इति द्वौ शब्दौ निष्पत्तिर्जाता। म्दअपतवद शब्दस्यार्थोऽ{स्ति 'परितः' वर्तते। यस्या{भिप्रायः ज्वजंस आवरणम् इति। एव×च ष्उमदजष् इति शब्दस्यार्थः 'परितः' वर्तते। यस्या{भिप्रायः ज्वजंस आवरणम् इति। एव×च ष्उमदजष् इति शब्दस्यार्थः अपेक्षया भ्इपजमक मज व`नततवनदकपदह अस्ति। केचन पर्यावरणविद् शब्दस्य अपेक्षया भ्इपजमक ;प्राकृतिकवासःद्ध शब्द अथवा डपसपमद ;वातावरणम् अथवा स्थितिःद्ध शब्दस्य प्रयोगः कृतः। यस्य अभिप्रायः परिस्थिति अथवा परिवृत्तिः मन्यते।

विश्वकोषानुसारम्– पर्यावरणस्य अन्तर्गतसर्वासां दिशानां संगटनानां प्रभावाना×च सम्मिलितं समायोजनं भवति। यतः कोऽ{पि जीव अथवा जातितः वा उद्भवविकासश्च मृत्युमपि प्रभावितं कुर्वन्ति।

पर्यावरणं कथं शु(ं स्यात् इत्यस्ति महीयान् प्रश्नः। वेदेषु प्रतिपदं चोत्तरितं भवति। यथा दशमे मण्डले परमात्मना मानवाः आदिश्यन्ते यद्–

'वनस्पतिं वन आस्थापयध्वम्।'[1]